Gx – मार्था और मैरी के घर में यीशु लूका १०:३८-४२ | 1

– Save This Page as a PDF–

मार्था और मैरी के घर में यीशु

लूका १०:३८-४२

खुदाई: ये दोनों बहनें कैसे अलग हैं? क्यों? मैरी को डांटने के लिए मार्था की प्रेरणा क्या थी? मरियम की पसंद बेहतर क्यों है? यीशु यहाँ क्या कहना चाह रहे हैं?

चिंतन: आपके लिए, मैरी और मार्था दोनों के अच्छे बिंदु और अंध बिंदु क्या हैं? आप सबसे अधिक किसको पसंद करते हैं? क्यों? आप यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप अच्छा हिस्से न चूकें?

यहां हम दो असाधारण महिलाओं से मिलते हैं – मार्था और
मिरियम। वे बेथनी के छोटे से गाँव में अपने भाई लाजर के साथ रहते थे। यह जैतून पर्वत के ठीक ऊपर था और येरुशलायिम से आसान पैदल दूरी पर था, जो मंदिर के पूर्वी द्वार से दो मील दक्षिण-पूर्व में था। लूका और योचनान दोनों ने दर्ज किया कि येशुआ ने इस परिवार के घर में आतिथ्य का आनंद लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि जब वह यहूदिया में था तो यह उसका “घरेलू आधार” था।

मार्था और मैरी एक आकर्षक जोड़ी बनाते हैं – कई मायनों में बहुत अलग, लेकिन एक महत्वपूर्ण मामले में एक जैसे। . . वे दोनों मेशियाच से प्यार करते थे। यह प्रत्येक महिला का एक सुसंगत पैटर्न है जिसे बाइबल प्रशंसनीय मानती है। वे सभी यीशु की ओर इशारा करते हैं। वह तानाख की प्रत्येक असाधारण महिला के लिए हार्दिक अपेक्षा का केंद्र थे, और वह ब्रिट चादाशाह की सभी प्रमुख महिलाओं के बहुत प्रिय

Gx – मार्था और मैरी के घर में यीशु लूका १०:३८-४२ | 2

थे। मार्था और मरियम जिबंत उदाहरण हैं। वे गुरु की सांसारिक सेवकाई के दौरान उनके अनमोल निजी मित्र बन गए। इससे भी अधिक, उन्हें उनके परिवार से गहरा प्रेम था। प्रेरित युहन्ना, जो येशुआ को बहुत अच्छी तरह से जानता था, ने कहा कि वह मार्था और उसकी बहन और लाजर से प्यार करता था (योचनान ११:५)।

हमें कोई अंदाज़ा नहीं है कि यह विशिष्ट घराना गैलीलियन रब्बी के इतना करीब कैसे हो गया। चूँकि किसी भी पारिवारिक रिश्ते का कभी उल्लेख नहीं किया गया है, ऐसा लगता है कि मार्था और मैरी उन लोगों में से केवल दो थे जिन्होंने मसीहा को अपने मंत्रालय के आरंभ में शिक्षा देते हुए सुना, उसका आतिथ्य सत्कार किया और उस तरह से उसके साथ संबंध बनाए। लेकिन रिश्ते की शुरुआत चाहे जो भी हो, यह स्पष्ट रूप से एक गहरी व्यक्तिगत संगति में विकसित हुआ।

निस्संदेह आतिथ्य सत्कार इस परिवार की विशिष्ट पहचान थी। मार्था को विशेष रूप से हर जगह एक कुशल परिचारिका के रूप में देखा जाता है। यहां अपने वृत्तांत में लूका ने परिवार के निवास का वर्णन करते हुए कहा कि मार्था ने अपना घर खोला। यह, इस तथ्य के साथ संयुक्त है कि उसका नाम आम तौर पर उसके भाई-बहनों के साथ सूचीबद्ध होने पर सबसे पहले आता है, इसका तात्पर्य यह है कि वह सबसे बड़ी बहन थी। लाजर तीनों में सबसे छोटा लगता है क्योंकि उसका नाम युहन्ना ११:५ में सबसे आखिर में आता है, और तथ्य यह है कि लाजर को किसी भी कथा में सबसे पहले पेश नहीं किया गया है
– यहां तक कि योचनन का वर्णन भी शामिल है कि वह मृतकों में से कैसे उठाया गया था।

कुछ लोग सोचते हैं कि घर में मार्था की प्रमुख स्थिति यह दर्शाती है कि वह एक विधवा थी। लेकिन यह खामोशी से दिया गया तर्क है। हम केवल इतना जानते हैं कि ये तीन भाई-बहन एक साथ रहते थे, और ऐसा कोई उल्लेख नहीं है कि उनमें से किसी की कभी शादी हुई थी। न ही इस बारे में कोई संकेत दिया गया है कि उनकी उम्र कितनी थी । पवित्रशास्त्र हमें इस परिवार के साथ मसीहा की बातचीत के तीन महत्वपूर्ण विवरण देता है। सबसे पहले, यहां लूका १०:३८-४२ में। दूसरे, हमें इन दोनों महिलाओं के जीवन की करीबी झलक उनके छोटे भाई लाजर की मृत्यु में मिलती है (देखें Ia– लाजर का पुनरुत्थान: पहला पुनरुत्थान)। और तीसरा, जब मरियम ने यीशु को दफनाने के लिए तैयार करने के लिए उसके पैरों का अभिषेक किया (देखें Kb – बेथनी में यीशु का अभिषेक)।

जब येशुआ और उसके साथी अपने रास्ते पर थे, वह एक गाँव में आया जहाँ मार्था नाम की एक महिला ने उसके लिए अपना घर खोला (लूका १०:३८)। मार्था दोनों बहनों में बड़ी लगती थी। लूका द्वारा उसके व्यवहार का वर्णन उन चीज़ों में से एक है जो इस विचार का समर्थन करते हैं कि ये तीन भाई-बहन अभी भी युवा वयस्क थे।

अपने महान श्रेय के लिए, आतिथ्य सत्कार मार्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वह अपने घरेलू कर्तव्यों को लेकर परेशान रहती थी। वह चाहती थी कि सब कुछ बिल्कुल

Gx – मार्था और मैरी के घर में यीशु लूका १०:३८-४२ | 3

सही हो। वह एक कुशल और निस्वार्थ परिचारिका थी, और ये सराहनीय गुण थे। उनका अधिकांश व्यवहार बहुत ही सराहनीय था।

दूसरी ओर, मरियम गुरु से मंत्रमुग्ध थी। उसने स्पष्ट रूप से अपने आप को घर पर ही बना लिया था, संगति और बातचीत का आनंद ले रहा था। इसमें कोई संदेह नहीं कि बारह और अन्य अतिथि उससे प्रश्न पूछ रहे थे, और वह ऐसे उत्तर दे रहा था जो विचारोत्तेजक, आधिकारिक और अत्यंत ज्ञानवर्धक थे। मार्था की मरियम नाम की एक बहन थी, जो प्रभु के चरणों में बैठी, जो कुछ उन्होंने कहा उसे सुनकर मंत्रमुग्ध हो गई (लूका १०:३९)। लेकिन मार्था उन सभी तैयारियों से विचलित थी जो की जानी थीं। मार्था बहुत ही सावधानी से काम करने के लिए सही दिशा में चली गई।

हालाँकि, जल्द ही मार्था मिरियम से चिड़चिड़ी हो गई। यह कल्पना करना आसान है कि वह इतनी निराश कैसे हो गई। उसने संभवतः पहले कुछ सूक्ष्म संकेत देने की कोशिश की। शायद ज़ोर से अपना गला साफ़ किया हो, या गुस्से में साँस छोड़ी हो जैसे कि बहुत परेशान हो। उसकी बहन को यह याद दिलाने के लिए कुछ भी कि उसे थोड़ी मदद की ज़रूरत है। जब वह सब विफल हो गया, तो उसने संभवतः वहीं सफाई शुरू कर दी जहां मैरी बैठी थी। लेकिन कुछ भी काम नहीं आया (कोई व्यंग्यात्मक इरादा नहीं)। अंत में, उसने सूक्ष्मता का सारा दिखावा छोड़ दिया और यीशु के ठीक सामने अपनी बहन के खिलाफ अपनी शिकायत व्यक्त की। वह उसके पास आई और पूछा: प्रभु, क्या आपको परवाह नहीं है कि मेरी बहन ने मुझे काम करने के लिए छोड़ दिया है खुद? उससे कहो कि मेरी सहायता करे (लूका १०:४०)! मार्था की शिकायत अपरिपक्व और लड़कियों जैसी लगती है। मसीहा का जवाब, हालांकि हल्की फटकार वाला था, इसमें लगभग दादा जैसा लहजा है।

मार्था, मार्था, प्रभु ने उत्तर दिया, तुम बहुत सी बातों से चिंतित और परेशान हो, परन्तु केवल एक ही बात आवश्यक है, क्योंकि मरियम ने अच्छा हिस्से चुन लिया है, जो उससे छीना नहीं जाएगा (लूका १०:४१-४२ एनएएसबी)। मार्था पूरी तरह से चौंक गई होगी। उसे ऐसा कभी नहीं लगा कि वह गलत हो सकती है, लेकिन उस छोटे से दृश्य के कारण उसे येशुआ से सबसे कोमल चेतावनी मिली। लूका का विवरण यहीं समाप्त होता है, इसलिए हम शायद यह निष्कर्ष निकालने में सुरक्षित हैं कि संदेश सीधे मार्था के दिल में प्रवेश कर गया और मसीह के शब्दों का बिल्कुल पवित्र प्रभाव पड़ा जो हमेशा उन लोगों पर पड़ता है जो उससे प्यार करते हैं। मसीहा द्वारा मार्था को फटकारने से तीन महत्वपूर्ण सबक सामने आते हैं।

सबसे पहले, हमें अपने से अधिक दूसरों का सम्मान करना चाहिए (रोमियों १२:१०; फिलिप्पियों २:३-४; प्रथम पतरस ५:५)। पहले तो मार्था का बाहरी व्यवहार सच्ची दासता जैसा प्रतीत होता था। लेकिन मरियम के साथ उसका व्यवहार जल्द ही अन्यथा साबित हुआ। मार्था के शब्दों ने अन्य मेहमानों के सामने उसकी बहन को अपमानित किया। उसने या तो इसके बारे में पहले से नहीं सोचा या फिर इसकी परवाह ही नहीं की। इतना ही नहीं, उसने मान लिया कि मरियम आलसी थी (रोमियों १४:४)। लेकिन असल में

Gx – मार्था और मैरी के घर में यीशु लूका १०:३८-४२ | 4

मरियम ही थी जिसका दिल सही जगह पर था। और यीशु यह जानता था।

मार्था का व्यवहार दर्शाता है कि मानवीय अभिमान कितनी सूक्ष्मता और पापपूर्णता से हमारे सर्वोत्तम इरादों को भी भ्रष्ट कर सकता है। येशुआ और उसके अन्य मेहमानों का इंतजार करना कोई बुरी बात नहीं थी। लेकिन जिस क्षण उसने प्रभु की बात सुनना बंद कर दिया और उसके अलावा किसी और चीज़ को अपने ध्यान का केंद्र बना लिया, वह बहुत आत्म-केंद्रित हो गई। इसने उसे कई अन्य प्रकार के पापों के प्रति भी संवेदनशील बना दिया: क्रोध, आक्रोश, ईर्ष्या, अविश्वास, निर्दयीता और आलोचनात्मक भावना। यह सब कुछ ही मिनटों में मार्था में भड़क उठा।

सबसे बुरी बात यह है कि मार्था के शब्दों ने स्वयं मसीह को चुनौती दी: प्रभु, क्या आपको परवाह नहीं है? क्या उसने सचमुच कल्पना की थी कि उसे कोई परवाह नहीं है? निश्चित रूप से वह उससे बेहतर जानती थी। अपने परिवार के तीनों सदस्यों के प्रति मसीहा का प्रेम सभी के लिए स्पष्ट था (यूहन्ना ११:५)। लेकिन मार्था के विचार और भावनाएँ खुद पर बहुत अधिक केंद्रित हो गई थीं। एक बार जब उसने अपना ध्यान यीशु से हटा लिया और मैरी को आलोचनात्मक दृष्टि से देखना शुरू कर दिया, तो उसकी शाम बर्बाद हो गई।

इसके विपरीत, मरियम ईसा मसीह के विचारों में इतनी व्यस्त थी कि वह मार्था के क्रोध से पूरी तरह अनजान थी। वह उनके चरणों के पास खड़ी थी और हर शब्द को ऐसे आत्मसात कर रही थी मानो यह आखिरी चीज थी जो वह अपने जीवन में सुन रही थी। वह आलसी नहीं थी; उसने केवल यह पहचाना कि वास्तव में क्या महत्वपूर्ण था। परमेश्वर का पुत्र स्वयं उसके घर में अतिथि था। उस समय उसे सुनना और उसकी आराधना करना उसकी ऊर्जा का सबसे अच्छा उपयोग था और उसके लिए अपना ध्यान केंद्रित करने का एक सही स्थान था। दूसरे शब्दों में, उसकी प्राथमिकताएँ क्रम में थीं।

यदि मार्था ने वास्तव में मरियम को अपने ऊपर प्राथमिकता दी होती, तो उसने अपनी बहन में मसीहा के लिए समझ और प्रेम की गहराई देखी होती जो उससे भी अधिक थी। वह अपनी अधिक शांत, विचारशील बहन से बहुत कुछ सीख सकती थी। परन्तु अभी तो नहीं ना। मार्था को एक मेज सजानी थी, खाना ओवन से निकालना था और कई चीजें थीं जिनके बारे में वह चिंतित और परेशान थी। इससे पहले कि वह यह जानती, मैरी के प्रति उसकी नाराजगी बढ़ गई थी और वह अब खुद को रोक नहीं पा रही थी। मरियम की उनकी सार्वजनिक आलोचना गर्व की एक बदसूरत अभिव्यक्ति थी।

दूसरा, प्रत्येक आस्तिक के लिए आराधना सभी प्राथमिकताओं में सर्वोच्च है। मानवीय रूप से कहें तो मार्था की भावनाएँ स्वाभाविक और कुछ हद तक समझने योग्य थीं। शायद यही एक कारण है कि मसीहा की फटकार इतनी हल्की थी। आम तौर पर, छोटी बहन से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह मेहमानों को भोजन परोसने में मदद करेगी। बहरहाल, मैरी ने जो किया वह अब भी बेहतर था। उसने सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि की खोज की थी:

Gx – मार्था और मैरी के घर में यीशु लूका १०:३८-४२ | 5

किसी के दिल की सच्ची आराधना और भक्ति और राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के प्रति पूरा ध्यान। यह सेवा से भी उच्च प्राथमिकता थी, और मार्था को येशुआ के लिए भोजन तैयार करने में मदद करने जैसी दयालु और लाभकारी चीज़ के लिए भी, उसका अच्छा हिस्सा उससे नहीं छीना जाएगा। मरियम का विनम्र, आज्ञाकारी हृदय, मार्था की अच्छी तरह से सजाई गई मेज की तुलना में मसीहा के लिए कहीं अधिक बड़ा उपहार था।

यह प्रत्येक आस्तिक के लिए आराधना को सभी प्राथमिकताओं में सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में स्थापित करता है। कुछ भी नहीं, यहाँ तक कि प्रभु की सेवा भी, उनकी बात सुनने और उनकी आराधना करने से अधिक महत्वपूर्ण है। याद रखें कि येशुआ ने कुएं के पास सामरी महिला से क्या कहा था: ईश्वर सच्चे उपासकों की तलाश कर रहे हैं (यूहन्ना ४:२३ एनएएसबी)। अभिषिक्त व्यक्ति को मरियम में एक मिला था। वह मार्था की फटकार की पुष्टि नहीं करेगा क्योंकि यह मैरी थी, मार्था नहीं, जो वास्तव में समझती थी कि ईश्वर की ओर से किए गए कार्यों की तुलना में आराधना करना ईश्वर के प्रति एक उच्च कर्तव्य है।

यह ख़तरा है, यहाँ तक कि उन लोगों के लिए भी जो यीशु से प्यार करते हैं, कि हम उसके लिए काम करने के बारे में इतने चिंतित नहीं हो जाते कि हम उसकी आराधना करने की उपेक्षा करने लगते हैं। हमें कभी भी मसीहा के प्रति अपनी सेवा को उसके साथ अपने रिश्ते पर हावी नहीं होने देना चाहिए। जिस क्षण हमारे लिए हमारे कार्य हमारी आराधना से अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं, हम अच्छे हिस्से से चूक जाते हैं।

मार्था एक अच्छी इंसान, नौकर और आस्तिक थी। वह प्रभु से प्रेम करती थी और उसका विश्वास सच्चा था। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण चीज़ की उपेक्षा करके और खुद को केवल बाहरी गतिविधियों में व्यस्त करके, उसने अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शन खो दिया। अपनी बहन के प्रति मार्था की कठोरता ने यह उजागर कर दिया कि वह किस हद तक भटक गई थी। यह संदूषण किसी भी आस्तिक को हो सकता है। नतीजतन, हमें हमेशा इसके प्रति सतर्क रहना चाहिए और अपने दिलों की रक्षा करनी चाहिए।

तीसरा, हम जो मानते हैं वह उससे अधिक महत्वपूर्ण है जो हम करते हैं। मार्था की सारी तैयारियाँ उस अच्छे हिस्से से ध्यान भटकाने वाली बन गईं जिसकी वास्तव में आवश्यकता थी – यीशु मसीह के साथ एक गतिशील संबंध। अच्छे कार्य हमेशा इस रिश्ते से निकलते हैं और इसका फल होते हैं। हम जो करते हैं वह महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह प्रमाण है कि हमारा विश्वास जीवित और वास्तविक है (याकूब २:१४-२६)। लेकिन येशुआ के साथ हमारा रिश्ता पहले आना चाहिए, और यही सच्चे और स्थायी कार्यों के लिए एकमात्र व्यवहार्य आधार है। ऐसा लगता है कि मार्था क्षण भर के लिए ये बातें भूल गई है। वह ऐसे व्यवहार कर रही थी मानो मसीहा को उसके लिए उसके काम की ज़रूरत से ज़्यादा उसके लिए उसके काम की ज़रूरत थी।

मार्था एक सेवक हृदय और काम करने की दुर्लभ क्षमता वाली एक नेक और धर्मपरायण

Gx – मार्था और मैरी के घर में यीशु लूका १०:३८-४२ | 6

महिला थी। आराधना और ज्ञान के उपहार के साथ, मैरी अब भी कुलीन थी। दोनों अपने- अपने तरीके से उल्लेखनीय थे। यदि हम उनके उपहारों को एक साथ तौलें, तो वे हमारे अनुसरण के लिए अद्भुत उदाहरण हैं।